Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 04(II), October-December, 2025, pp. 75-78

मीराकांत के रचना संसार में स्त्री

मुकेश कुमार शर्मा*

शोधार्थी हिन्दी विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: mukeshdausa9929@Gmail.com

Citation: *शर्मा, मुकेश . (2025). मीराकांत के रचना संसार में स्त्री. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 15(04 (II)), 75–78*

सार

भारतीय समाज सदैव आदर्शवादी रहा है, जहाँ पर भारतीय नारी सम्मानीय और पूजनीय तो है परन्तु इनके लिए स्वातंत्रय शब्द उपयुक्त नहीं लगता, क्योंकि वास्तविकता में भरतीय नारी स्वतंत्र है ही नहीं है। यहाँ उनको अनेक रूढ़िवादी परम्पराओं और कुरूतियों ने जकड़ रखा है। तथा पुरूषवादी समाज होने के कारण उनको ये सब अधिकार कभी प्राप्त ही नहीं हुए। पश्चिमी के देशों में चल नारी मुक्ति आंदोलनों का कुछ असर भारतीय समाज में भी दिखाई दिया परन्तु यह असर अपनी छाप नहीं छोड़ पाया, भारतीय नारी हमेशा से ही जीवन के उतार चढ़ाव और संघर्ष को सहन करती आई है। पाश्चात्य आंदोलनों के कारण भारतीय नारी में सजगता के भाव, आत्मनिर्भर होने का भाव और समान अधिकारों की बात दृष्टिगोचर होता है। भारतीय नारी को वैदिक काल में देवी की प्रतिभा के रूप से पूजा गया था। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता की भावना को साकार रूप प्रदान किया गया था। जहाँ गार्गी, मैत्रेयी, सूर्या, अपला, देवयानी जैसी आदर्श और महान नारियों को देखा गया जिन्होंने ने केवल आध्यात्मिक व दार्शनिक चिंतन का प्रतिनिधित्व किया प्रारंभ हो गई। अर्थात् जिस भारतीय नारी को वैदिक काल में पूजनीय माना जाता था, पूजा जाता था, उसे धीरे धीरे रूढ़िवादी समाज की व्यवस्थाओं और परम्पराओं ने दासी बना दिया। यही से नारी की स्वतंत्रता का बहिष्कार होने लग गया। महिलाओं को मात्र साधन मान लिया गया और भोग विलास की वस्तु मान लिया गया। मुगलों द्वारा बहु पत्नी रखने की परम्पराओं के साथ बादशाहों की अनेकों पत्नियाँ रखने की परम्पराएं विद्यमान थी। हिन्दुओं ने अपनी पत्नियों ओर बहन बेटियों को इस कुदृष्टि से बचाने के लिए पर्दा प्रथा का आश्रय लिया। प्रस्तुत शोध आलेख में बताया गया है कि स्वातंत्रयोत्तर युग विभिन्नताओं का युग है। यह युग सिर्फ पुरूष जाति के उत्थान का युग नहीं अपितु नारी उत्थान एवं प्रगति को दर्शाता है। विकास का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जो नारी से अछूता हो। न सिर्फ भारत में अपितु विश्व में नारी ने अपनी विजय पताका पहरायी है। सन् 1947 के बाद के नाट्य साहित्य पर स्वतंत्रता का विशेष प्रभाव पड़ा है। आधुनिक कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी नारी को अबला बना दिया।

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।

आँचल में है दूध और आँखों में है पानी ।।

उन्होनें नारी को अबला बनाकर उसे कमजोर कर दिया। उन्होनें यह विचार नहीं किया कि यह नारी उसे देश की नारी है। जिसमें महारानी लक्ष्मीबाई, रानी सारंधा, रानी दुर्गावती जैसी नारियों ने जन्म लिया है। फिर नारी अबला कैसे हो सकती है। यही प्रसाद युग में आकर पुरूष ने नारी को पहचाना। नारी केवल श्रद्धा है।

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष श्रोत सी बहा करों जीवन के सुन्दर समतल में।।।

लेकिन दीनकर तक आते–आते वही नारी स्वच्छन्द मुक्त होगी। अपसरा बन गयी। जो मातृत्व से ग्रहणा करती है जो एक प्रेम के कारण गर्भ कुरूपता सहन नहीं कर सकती ।

शब्दकोशः *साहित्य में स्त्री की स्थिति, संघर्ष, सामाजिक बंधन के प्रति विद्रोह, सामाजिक कार्य यथार्थ का चित्रण, प्रेम वेदना, प्रतिरोध।*

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य अनेक प्रतिभाशाली साहित्यकारों से भरा पडा है। जहाँ साहित्यकारों ने विभिन्न प्रकार की समस्याओं और कुरूतियों पर प्रहार किया हैं, तथा समाज को इन बुराइयों से निकालने का भरसक प्रयास किया हैं । और इसमें सफल भी रहे है। इन समस्याओं में कई समस्याएं सामाजिक कुरूतियाँ और अंधविश्वास था, जिसका सबसे ज्यादा शिकार महिला समाज था। साहित्य जगत के कई साहित्यकारों ने महिला सुरक्षा और महिलाओं को शोषण से बचाने हेतु कई रचनाये की। इन्ही साहित्यकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं मीराकांत जी। जिन्होने स्त्री समाज को सश्क्त बनाने और जागरूक करने हेतु अनेक प्रकार के साहित्यिक ग्रन्थ और रचनाये लिखी। हिन्दी साहित्य के इतिहास को देखने से पता चलता है, कि महिला रचनाकारों ने उपन्यास, कहानी व अन्य विधाओ में स्त्री–विमर्शो की बारीकियों को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया किन्तु नाट्य जगत अभी महिला मौलिक नाटककारों की संख्या शैशवस्था में है, मीराकांत ने न केवल अपने नाटकों में अपितु अपने संपूर्ण साहित्य में श्स्त्री–विमर्शश की समस्याओं को समाज के समक्ष रखा है।

यही कारण है, कि इन्होंने उपेक्षित और प्रताड़ित नारी को केन्द्र में रखकर सृजन किया तो नाटककार भुवनेश्वर प्रसाद जैसे लगभग विस्तृत साहित्यिक प्रतिभा को याद करते हुए रचनात्मक जगत में विसंगतियों से जूझती प्रतिकाओं के दर्द को भी वाणी दी है।[६]

इतना ही नहीं मीराकांत ने अपने साहित्य में कश्मीर में हुए विस्थापन के कारण व्यक्तियों मानसिक और शारीरिक मनोदशाओं और उनकी आंतरिक व्यथा को भी अपने साहित्य की परिधि में स्थान दिया। आपने अपना साहित्य केवल मानव मात्र की कहानियों के पास ना रखकर, मनुष्य के संबंधों, अधिकारों और सत्ता के संघर्ष को यथार्थ रूप में प्रकट किया है। जो इस संघर्ष को उम्मीद की किरण देता नजर आता है। परन्तु स्वतंत्रता के इतने समय के पश्चात भी महिला समाज को हांसिये पर रखा गया। मीराकांत का साहित्य महिलाओं को समानता का अधिकार प्रदान कर उनको अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। और यह दर्शाने की कोशिश करता है की वर्तमान समय की नारी सशक्त और संघर्षशील हैं। आपने अपने साहित्य के माध्यम से कई ऐसे सवाल खडे किये है जो महिलाओं के हक को सही मायनों में दिलवाने का कार्य करता है। ष्आज की तिथि में मीराकांत सबसे सक्रिय, श्रेष्ठ नाटककार है। उनके नाटक स्त्री–अस्मिता की कुलबुलाहट को सच्चाई में बयाँ करते हैं। मीराकांत के नाटक सिर्फ स्त्री–विमर्श की ही पैरोकारी नहीं करते, बल्कि वर्तमान समस्याओं पर भी विश्व समुदाय के समक्ष अपनी आवाज बुलंद करते हैं।

एक नाटककार के रूप में मीराकांत का व्यक्तित्व सरल, सजीव और मार्मिक था। आपने महिला शक्ति और उनके साथ ऐसे लोगो के प्रति लेखन कार्य किया जिनको साहित्य जगत में किनारे कर दिया गया था। ऐसे लोगो को आपने साहित्य के केन्द्र में स्थापित करने का कार्य किया हैं। यहाँ मीराकांत का उद्देश्य किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के व्यक्तित्व को कुरेदना नहीं बल्कि साहित्य की सर्जन प्रक्रिया में अकेला महसूस कर रहे लोगों के प्रति अपने साहित्य को मददगार बनाने का है। इन उद्देश्यों को मीराकांत जी ने प्राप्त भी किया ।

सतीश मेहता के अनुसार षकिसी सर्जना की रचना–प्रक्रिया निश्चित रूप से ऐसे ही अकेलेपन की माँग करती है, जिस पर मीराकांत शत–प्रतिशत खरी उतरती है। सफल बीजरूप में प्राप्त छोटे से सूत्र से अपनी कल्पना लोक के आधार पर ऐसा वृहद् संसार रच लेता है, जो वास्तविकता का आभास देता है। ऐसे ही सूत्रों को आधार बनाकर मीराकांत अपना सृजन–कार्य करने में है।[६] रंगमंच के क्षेत्र में यह आरोप कि मौलिक नाटकों का अभाव है बेबुनियाद है। हमारा कुछ वर्षों में यह भ्रम तोड़ दिया गया है कि हिन्दी में मौलिक नाटक व नाटककार नहीं है। कई हिन्दी नाटक है, जो सफलतापूर्वक मंचित किए जा रहे हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है, कि मौलिक हिन्दी नाटक के कंधे पर कोई शाप नहीं बैठा है। समकालीन रंग–परिदृश्य पर अपनी प्रभावी छाप छोड़ने वाला कोई दूसरा रचनाकार फिलहाल हमारे सामने नहीं है। मीराकांत ने स्त्री–विमर्श को अपने साहित्य के केन्द्र में इस रूप में प्रतिष्ठित किया है, जो स्त्री को समानता का अधिकार देते हुए भी हर युग के प्रासंगिक सत्य को समाज के समक्ष रखा है, जहाँ कोई भी देश या काल, बुद्धिमती–विदुषी स्त्री को पुरूष समाज कभी सह नहीं पाता। चाहे श्कन्धे पर बैठा था शापश् की विद्योतमा हो या श्नेपथ्य रागश् में चौथी–पाँचवी शती की रचना हो या 20वीं, 21वीं शती की मेधा, या एक अन्य श्ईहामृगश् की स्नेहगंधा, सिक्तछाया और सागरिका पुरूष की इच्छा और उसी से निर्णय से अवश–सी बंधी है। आज के आक्रामक स्त्री–विमर्श और स्वच्छंदतावादी आधुनिकता के बावजूद बुनियादी स्थिति में कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं आया है। हाँ, समयानुसार पुरूष द्वारा स्त्री को अपने हक में इस्तेमाल करने के तरीके जरूर बदल गए हैं।

पुरूष प्रधान समाज अपने रचनात्मक व्यक्तित्व को साहित्य के माध्यम से समाज के समक्ष अत्यंत कठिन दुरूह कार्य है, आज उनके रचनात्मक परिवेश को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं, वह विश्व में अपनी लेखनी से अपनी जगह बना चुकी है।

हिन्दी नाट्य–साहित्य में स्त्री–समस्याओं से संबंधित बहुत–सा सर्जनात्मक तथा वैचारिक साहित्य सामने आ रहा है, जिसके फलस्वरूप स्त्री आकांक्षाओं को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखने एवं गंभीर सवालों के साथ के साथ समझने की जरूरत महसूस होने लगी है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक परंपरागत रूढ़ियों एवं व्यवस्थाओं की जड़ता को तोड़ने का प्रयास करते हैं। स्त्री के संपूर्ण विकास के लिए स्वातंत्र्योत्तर नाटककार स्त्री–अधिकारों की सामाजिक चकबंदियों से टकराकर सामाजिक–नैतिक नियमों की एक पक्षीय नीति का विरोध करते प्रतीत होते हैं। इस क्रम में मीराकांत के नाटक कुछ आगे बढ़ते हुए स्त्री–मुक्ति एवं स्त्री विमर्श में अपनी वैचारिक भूमिका को र्द करते हैं। मीराकांत के नाटक (नेपथ्य राग, कंधे पर बैठा था शाप, उत्तर–प्रश्न, अंत हाजिर हो आदि) नारी–संबंधि युगीन प्रश्नों को प्रस्तावित करते हैं। पाठक एवं दर्शक को नारी के वर्तमान एवं भविष्य के प्रति चिंतित एवं बेचैन करते हैं। परिधि पर छिटकी स्त्री की व्यथा को प्रस्तुत करते हुए ये नाटक इस बात को भी स्पष्ट करते हैं, कि किस तरह स्त्री का सांस्कृतिक संहार किया गया तथा किस तरह स्त्री के अस्तित्व उसकी अस्तिमा एवं आत्मा–निर्भरता को दमन करने के लिए पुरूष ने हर युग में अपनी सत्ता की शक्ति एवं वर्चस्व के एकाधिकार का प्रयोग किया ।

साहित्य समीक्षा

विरादार श्रीदेवी बाबुराव (2018)

आज साहित्य जगत में स्त्री लेखन का विस्तार और विकास निरन्तर हो रहा है। महिलाओं ने अपनी लेखनी की ताकत से सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ आवाज उठाई है। मीराकांत ऐसी महिलाओं के बीच एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। मीराकांत ने सदियों से चली आ रही स्त्री जीवन की पांरम्परिकता को एक नए सिरे से नाट्यविधि से पिरोया है।

मोहम्मद हैदर (2011)

इस शोध प्रबंध में प्रस्ताव के रूप में लिखा है कि स्त्री किसी व्यक्ति का हनन किए बिना उसके भीतर सक्रिय अन्तर्विरोधो को प्रत्यक्ष करती है। वे इस इतिहास पुरूषों की मर्यादा की रक्षा करती हुई विडम्बनाओं को अनावृत करती है। मीराकांत की स्त्री अपने अस्तित्व, गरिमा, अपने शालीनता को बनाए रखते हुए अपना संघर्ष करती है।

पार्वती रामप्रसाद देखमुख (2021)

इस शोधा प्रबंध में मीराकांत : सृजक एवं सृजना, हिन्दी महिला नाटककारः विकासात्मक अध्ययन, मीराकांत के नाटकों का कथानक अध्ययन, मीराकांत के नाटकों में चित्रित समस्याएं , मीराकांत के नाटकों का शिल्पगत अध्ययन तथा मूल्यांकन एवं निष्कर्ष के साथ–साथ शोधग्रंथ को अच्छे से संजोया है। तथा मीराकांत के नाटकों में चित्रित समस्याओं को चित्रित किया गया है। इनके नाटकों की मूल संवेदना व्यापक एवं विभिन्न विषयों को पाठकों के समान प्रस्तुत करना हैं।

गुरूप्रीत कौंर (2021)

प्रस्तुत शोध में कहा गया है कि मनुष्य एक अनुकरणीय प्राणी है। यही कारण है कि मानव दूसरों की वेशभूषा, चाल–ढाल, हावभाव एवं क्रियाओं का अनुकरण करना चाहता है। ऐसा करने पर उसे संतुष्टी व प्रसन्नता मिलती है, वह आकर्षक एवं मर्मस्पर्शी घटनाओं तथा दृश्यों की अनुभूति से संतुष्ट नहीं होता, दूसरों के समान भावों को भी व्यक्त करता है। मुख मुद्राओं एवं अंग प्रत्यंगों के तोड़ मरोड़ द्वारा, नृत्य एवं संगीत तथा शब्दों द्वारा भावों को व्यक्त करता है। आधुनिक नाटककारी में मीराकांत कानाम आदर से लिया जाता है। मीराकांत ने अपने नाटकों में सामाजिक स्वीकृतियों एवं निषेधों की पितृसत्तात्मक स्थापनाओं पर प्रश्न किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. www.meerakant.com
2. प्रो. रमेश गौतम, उद्घटन वक्तव्य, हिन्दी साहित्य का पुनर्लेखन, हिन्दी विभाग कक्ष संख्या 15, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिनांक 14/10/2009
3. जयदेव तनेजा, रंग–प्रसंग, अंक 27, पृष्ठ 42
4. प्रभात खबर, 17 मई, 2008
5. जयदेव तनेजा, आधुनिक भारतीय नाट्य–विमर्श, राधाकृष्ण प्रकाशन, पहला संस्करण, 2010, नई दिल्ली, पृष्ठ 28
6. हिन्दी नाटक : नई परख, सपा, रमेश गौतम, स्वराज प्रकाशन।

❑❑❑